प्रश्न: स्वर संधि एवं उसके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालें।

उत्तर: <u>स्वर संधि की परिभाषा:</u>

दो अत्यन्त निकट स्वरों के परस्पर मिलने से ध्वनि में जो वर्ण-विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे - णर + अहिवा = णराहिवा (नराधिपः)

<u>स्वर संधि के भेद:</u>

प्राकृत में स्वर संधि के निम्न चार भेद हैं —

(1) दीर्घ स्वर संधि (2) ह्रस्व दीर्घ स्वर संधि
(3) गुण स्वर संधि (4) प्रकृति या संधि निषेध स्वर संधि।

नाम्ज्यांतेन दीर्घः॥ 1।2।6 हेम०

1 <u>दीर्घ स्वर संधि:</u> जिसमें ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, और 'उ' स्वर से यदि सवर्ण स्वर बाद में रहे, तो दोनों के स्थान पर सवर्ण दीर्घ होता है, उसे दीर्घ स्वर संधि कहते हैं। जैसे —

(क) अ + अ = आ - णर + अहिवा > णराहिवा (नराधिपः)
(ख) अ + आ = आ - ण + आलवइ > णालवइ (नालपति)

ह्रस्वो ... वृत्तौ॥ 1।2।1 हेम०

2. <u>~~ह्रस्व~~ दीर्घ स्वर संधि:</u> जिसमें प्राकृत के सामासिक पदों में नित्य या विकल्प से ह्रस्व स्वरों का दीर्घ एवं दीर्घ स्वरों का ह्रस्व हो जाता है, उसे ह्रस्व-दीर्घ स्वर संधि कहते हैं।

जैसे —

(क) ह्रस्व का दीर्घ — पइ + हरं = पईहरं = पइहरं (पतिगृह)
सत्त + बीसा = सत्तावीसा (सत्ताईस)
(ख) दीर्घ से ह्रस्व — गौरी + हरं = गौरिहरं (गौरीगृह)

... 3. <u>गुण स्वर संधि:</u> जिसमें 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' और 'उ' होतो दोनों के स्थान में क्रमशः 'ए' और 'ओ' गुणादेश होता है, उसे गुण स्वर संधि कहते हैं। (1।2।6 हेम०)

जैसे -

(क) अ + इ = ए - दिण + ईसो = दिणेसो (दिनेशः)
(ख) आ + ई = ए = गआ + ईसो = गएसो (गणेशः)
(ग) अ + उ = ओ = गूढ + उअरं = गूढोअरं (गूढोदरम्)
(घ) आ + ऊ = ओ = सासा + ऊसासा = सासोसासा (श्वासोच्छ्वास)

Scanned with OKEN Scanner

(iv) प्रकृतिभाव या संधि निषेध स्वर:

जिसमें दो स्वरों का मेल नहीं होने के कारण संधि नहीं होती है, उसे प्रकृति-भाव स्वर संधि कहते हैं।

जैसे - वि + अ = विअ।

वणो + अडउ = वणो अडउ।

निसा + अरो = निसाअरो (निशाचर)

रयणी + अरो = रयणीअरो

राअ + उलं = राउलं (राजकुलम्)

Scanned with OKEN Scanner